कथा भारती

क्र. १ रु. ३.५०.

डॉ. हेडगेवार

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक

उस समय भारत में अंग्रेजों का राज था। रानी विक्टोरिया के राज्यकाल के ६० वर्ष पूर्ण हुए थे तब अंग्रेजों ने देश भर में समारोह मनाया, पाठशालाओं में मिठाइयां बांटी।
आज आनन्द का दिन है। हमारी महारानी को राज्य करते हुए ६० वर्ष हुए।
कितनी अच्छी है मिठाई
हमारी महारानी जुग जुग जिये।
केशव अपनी मिठाई.... नाली में फैंकता है
न रानी है हमारी, न हमें खुशी है यह मिठाई खाना पाप है।
कुछ दिनों के बाद नागपुर के मध्य में स्थित "सीताबर्डी किले" पर अंग्रेजों का झण्डा यूनियन जैक फहराता देख केशव को बहुत दुःख होता है।
यह झण्डा आखों में खलता है। इसे उखाड़ फैंकना होगा।

केशव मित्रों के साथ विचार-विनिमय कर रहा है।

यदि हम सुरंग खोद कर किले के भीतर पहुंचते हैं...

वड़े गुरूजी के घर में खोदना ठीक रहेगा।

दूसरे ही दिन वड़े गुरूजी के घर में बाल देशभक्तों का गुप्त उद्योग प्रारंभ हुआ।

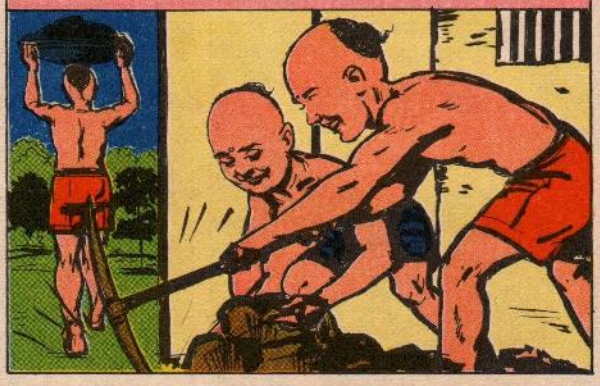

शाम को वड़े गुरूजी अपने घर आये...

बच्चों, यह क्या हो रहा है ?

हम किले तक सुरंग खोदेंगे।

अंग्रेजों का झण्डा हटा कर भगवा झण्डा फहरायेंगे।

वड़े गुरूजी ने बच्चों को सब बातें समझाई। बच्चे मान गये। वड़े गुरूजी ने केशव की उच्च भावना को सराहा।

शाबाश केशव तुम्हारे उच्च भाव नित्य बने रहें।

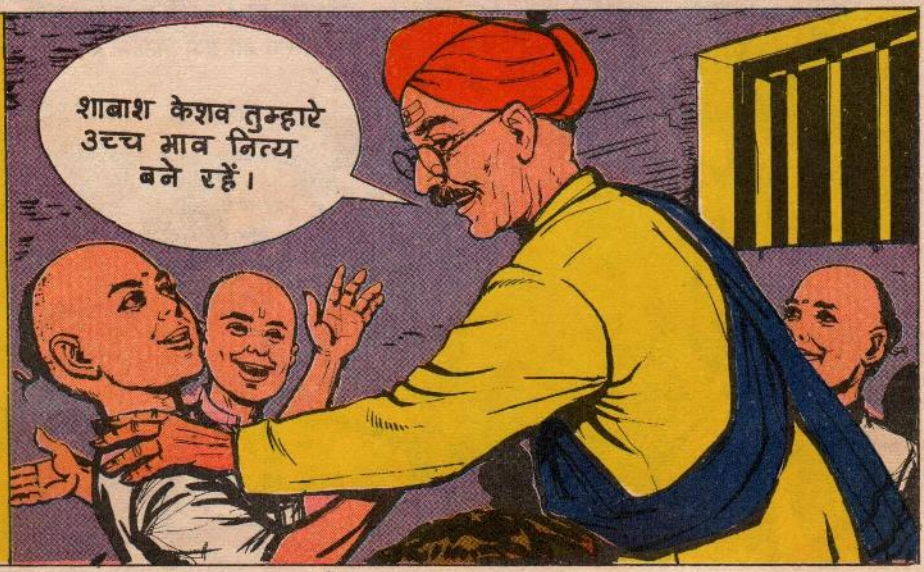

सन् १९०५ ईस्वी में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन घोषित किया। मुसलमानों में भेद भाव भरने की अंग्रेजों की यह चाल थी। इसके विरोध में सम्पूर्ण देश में तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

परिणामतः केशव के हृदय की देशभक्ति अधिक प्रज्वलित हुई। १९०७ में दशहरे के अवसर पर वह अपने चाचा के यहां रामपायली पहुंचा। शाम को सीमोल्लंघन के समय उसने भाषण दिया।

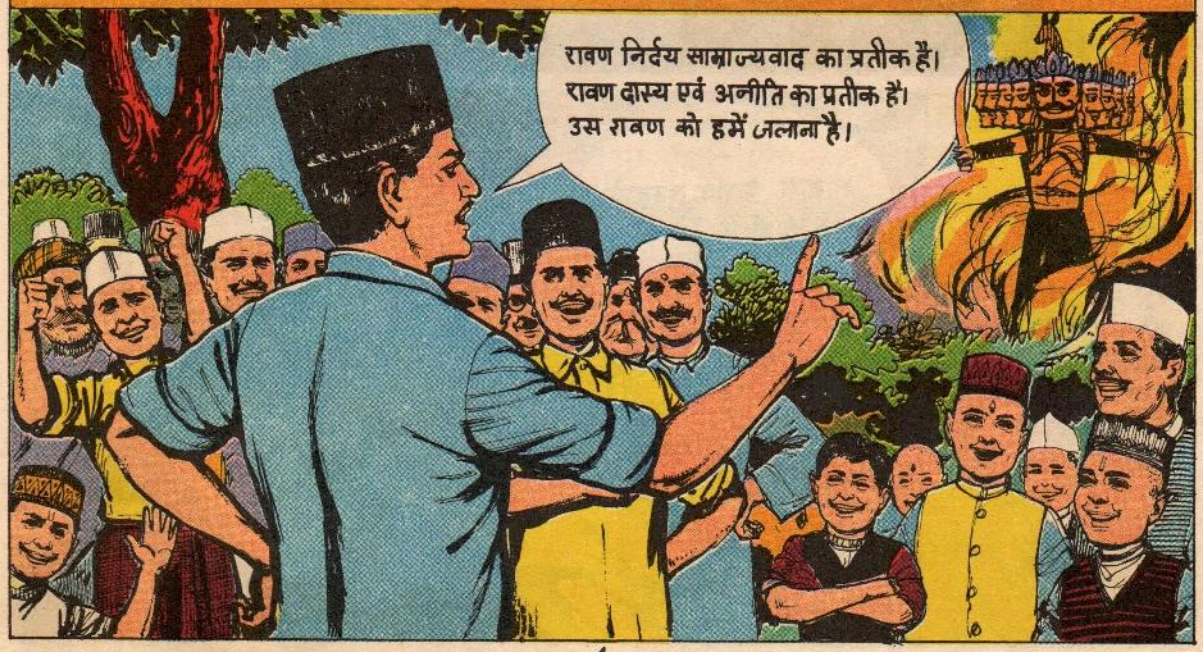

अंग्रेजों के अत्याचार बढ़ने लगे। उन्होंने कुछ नियम प्रसारित किये। उस समय केशव नीलसिटी हाईस्कूल नागपुर में पढ़ता था। शाला निरीक्षक आने वाले थे।

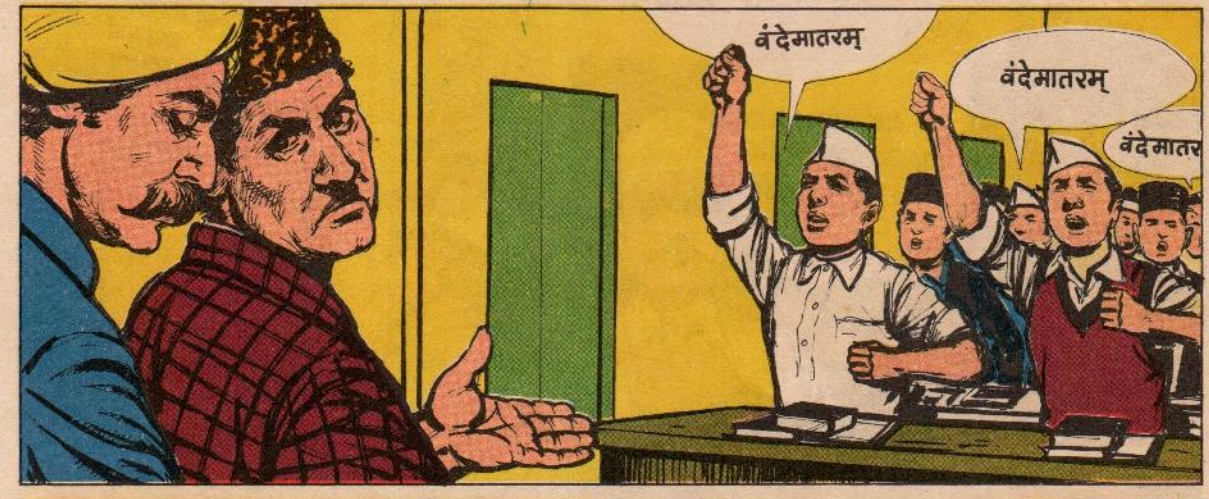

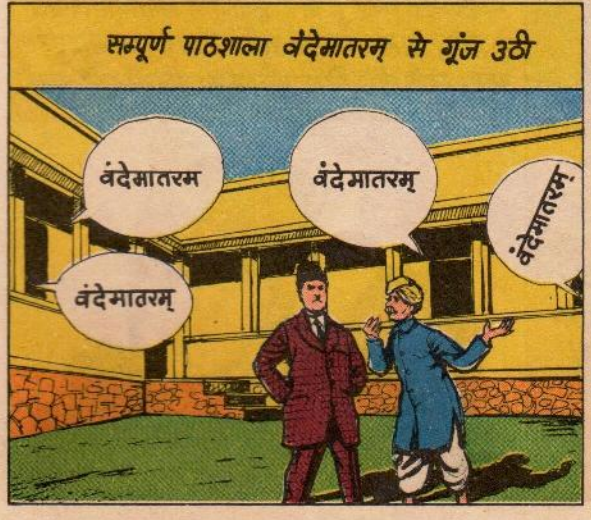

केशव रामपायली पंहुचा। वंहा उसने क्रान्तिकारी उद्योग प्रारंभ किये एक रात्री में उसने पुलिस थाने पर बम फैंका।

केशव नेगुप्त रीति से रामपायली कोड़ा पुलिस ने बहुत दौड़ धूप की पर इस काण्ड के स्रोत का पता न लगासकी।

वहां से केशव नागपुर पहुंचा। उसने बाल कृष्ण शिवराम मुंजे से परामर्श किया।

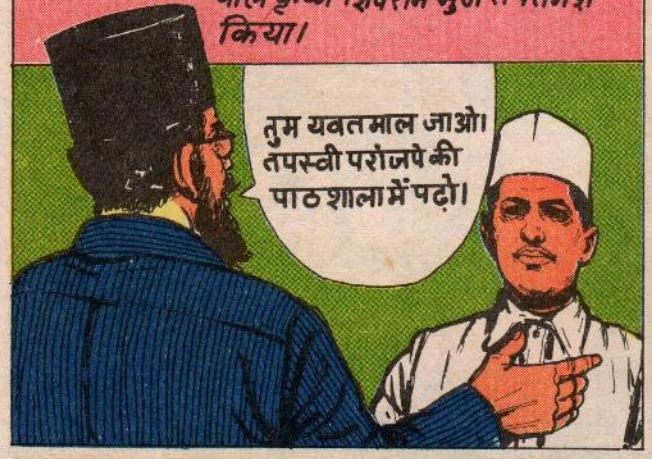

विद्यागृह भी अंग्रेजों का कोपभाजन बना।

विद्यागृह पर शासकीय बंधन डाले गये

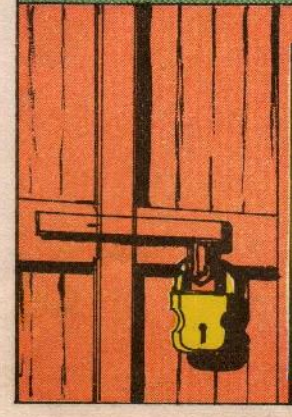

सूचना

1) परांजपे भाषण नहीं देंगे।
2) परांजपे चन्दा नहीं उगायेंगे।
3) परांजपे गांवों में नहीं जायेंगे।
4) कोई उन्हें चन्दा नहीं देगा।
5) कोई भी विद्यागृह की सहायता नहीं करेगा।

विद्यागृह बन्द हुआ। पूना तथा अमरावती जाकर केशव ने शालांत परीक्षा उत्तीर्ण की। वे पुनः नागपुर आये। उनके पीछे नित्य पुलिस का आदमी रहने लगा।

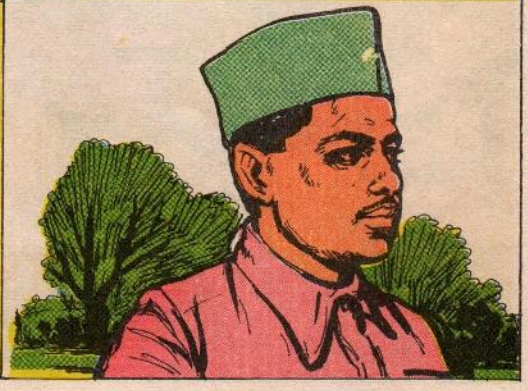

लोहे का गोला लिए केशव दौड़ रहा है। बगल में भोजन की थैली। पीछे हांफता हुआ गुप्तचर।

अंबाझरी तालाब के किनारे केशव भोजन करने बैठा है। उसने गुप्तचर को पास बैठाया। उसे भोजन कराया।

डॉक्टर मुंजे से परामर्श कर केशव ने डॉक्टर बनने हेतु कलकत्ता जाना निश्चित किया

केशव ने कलकत्ता के मेडिकल कॉलेज में प्रवेश पाया। पढ़ाई के साथ वे अन्य अनेक उद्योग करते थे। वे चिरशान्ति के शोधकों के पास भी जाते और उग्र विचारवादियों से भी मिलते। बंगजीवन से वे इतने घुलमिल गये, उत्तम बंगला बोलने लगे। तथा वे शीघ्र ही क्रांतिकारी समिति के सदस्य बने।

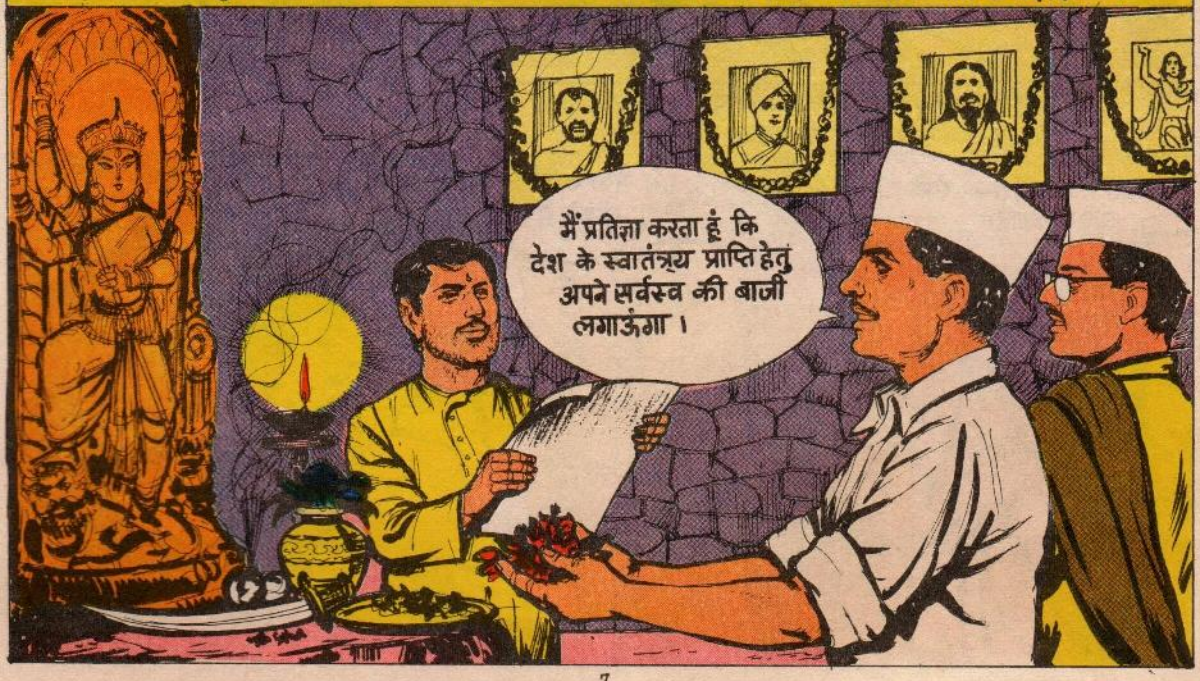

रात्री में क्रान्तिकारियों के बम बनाने के प्रयोग चलते थे

आज यहीं समाप्त करें।

बहुत रात हो गयी।

ज़ीने से उतरने की आहट पा, निचली सीढ़ी पर सोया गुप्तचर हड़बड़ाकर भागने लगा।

पकड़ो उसे, वह गुप्तचर है।

सब उसे घेरते हैं। हाथ उठे हैं

उसे मारो मत। वह हमारा मित्र बनेगा।

सन् १९१३ ईस्वी में बंगाल में बाढ़ का प्रकोप रहा। केशव अपने मित्रों की टोली लिए श्री रामकृष्ण आश्रम में पहुंचा।

अहा! आज देश को ऐसे ही युवक चाहिएं

हम सेवा कार्य करना चाहते हैं।

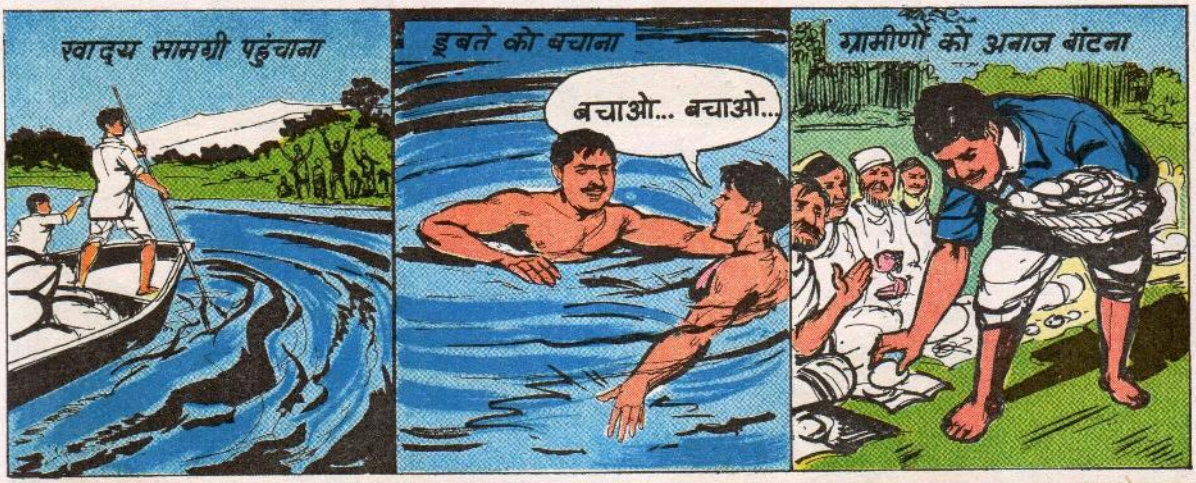

नेशनल मेडीकल कॉलेज में केशव की बल संपदा की बात फैल गयी तब एक दिन सुरेन्द्र घोष नाम का उनका सहपाठी ईर्ष्यावश उनके पास आया।

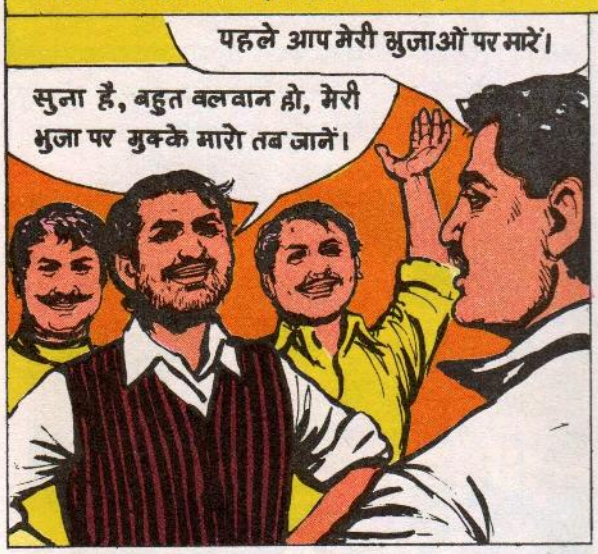

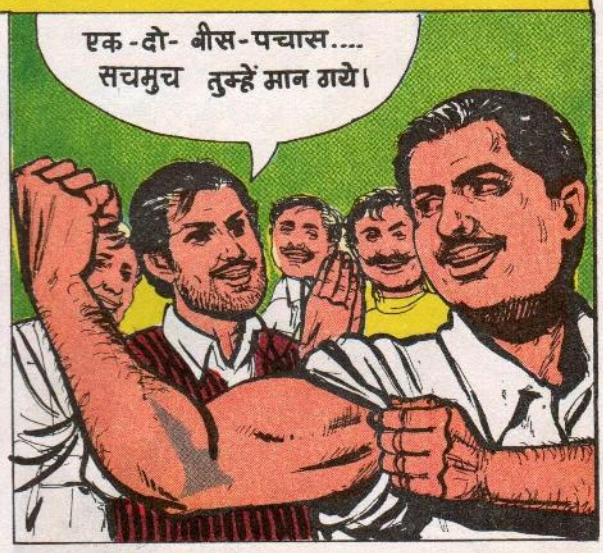

एक बार एक उद्दंड वक्ता लोकमान्य तिलकजी के बारे में अंट-शंट बकने लगा।

मौलाना लियाकत हुसैन कलकत्ता के एक नेता थे वे श्रोताओं में बैठे थे। वे दौड़कर केशव के पास आये।

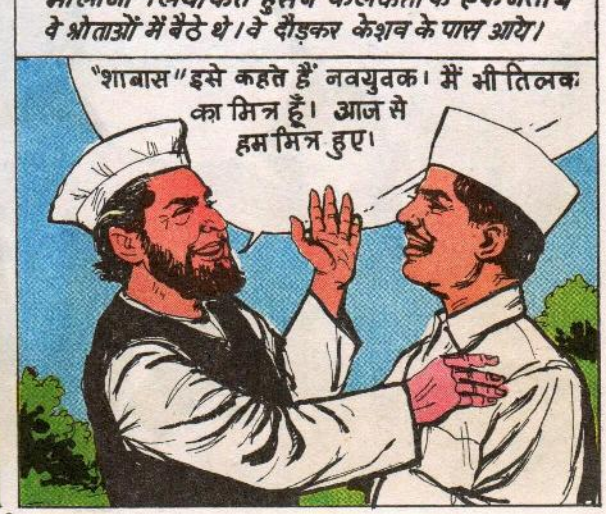

इस प्रकार के अनेक कार्य करते हुए वे पढाई में आगे थे। वे मेडीकल की अंतिम परीक्षा उत्तम अंक पाकर उत्तीर्ण हुए तब प्राचार्य ने उन्हें बुलवाया।

हेडगेवार, अभिनन्दन। साथ ही शुभ समाचार तुम्हारे लिए बड़ी तनख्वाह की नौकरी रंगून में तैयार है।

क्षमा करें। मैं नौकरी नहीं करूंगा मेरा जीवन राष्ट्र को समर्पित है।

केशवराव हेडगेवार डॉक्टर बनकर नागपुर लौटे परिवार के सब सदस्यों ने उन्हें नौकरी व्यवसाय आदि का अनुरोध किया तब उन्होंने अपने चाचा आबाजी को स्पष्ट रूप से पत्र लिखा।

मैंने आजन्म देशसेवा का व्रत लिया है। मेरे समर्पित जीवन में निजी सुखों को कहीं भी स्थान नहीं रहेगा मैं विवाह नहीं करूंगा...

सन् १९१४ ईस्वी में विश्वयुद्ध छिड़ा, उसका लाभ उठाते हुए क्रान्तिकारियों ने देशव्यापी योजनाएँ बनाईं। डॉक्टर जी ने शस्त्र प्राप्ति, वितरण आदि का कार्य किया। एक बार नागपुर स्टेशन पर रुकी गाड़ी से उन्होंने सोना-बारूद निकलवाया।

यह डिब्बा क्यों खुला है?

यह आदेश था..

उफ, हम ठगे गये।

विश्वयुद्ध में अंग्रेज जीते। भारत में निराशा का गई। डॉक्टर जी प्रना गये। उन्होंने देश की स्थिति पर लोकमान्य तिलक से विचार-विमर्श किया।

वहां से डाक्टर जी शिवनेरी दुर्ग पर गये जो शिवाजी महाराज का जन्म स्थान है। उसकी दुर्दशा देख उन्हें बहुत दुःख हुआ।

सन् १९२० में नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन होने जा रहा था। डॉक्टरजी ने उससे जोड़कर महाविद्यालय के युवकों का अधिवेशन बुलवाया

डॉक्टरजी ने कांग्रेस अधिवेशन में व्यवस्था प्रमुख के रूप में कार्य किया।

सन् १९२१ ई. में देशभर में असहयोग आन्दोलन प्रारंभ हुआ। डॉक्टरजी उसमें अग्रसर रहे। गांव-गांव तथा नगर-नगर में घूम कर उन्होंने प्रचार किया, परिणामतः पकड़े गये।

कारा-जीवन में डॉक्टरजी सबकी सहायता करते थे सदा प्रसन्न रहते और दूसरों को भी प्रसन्न रखते थे।

दिनभर वे कार्यमग्न रहते थे। जब रात में बिस्तर पर लेटते तो चिन्तन प्रारंभ हो जाता।

"यह सुवर्ण भूमि दरिद्र क्यों बनी? हम दास क्यों बने? थोड़े से आक्रामकों ने हमें परास्त क्यों किया? हमारे पतन के लिये कौन जिम्मेदार है? अंग्रेज या मुसलमान? क्या यह स्थिति बदलेगी?
कब?
कैसे?
कौन बदलेगा?

हम दासता के कारण दरिद्र हुए। आपसी फूट, निपट स्वार्थ आदि दुर्गुणों के कारण हम दास हुए। न हममें एकता थी न अनुशासन अतः थोड़े से शत्रुओं ने हमें परास्त किया। हमारे पतन के लिए हम ही जिम्मेवार हैं। अन्य नहीं। संगठित होने पर यह चित्र बदलेगा। मैं इस कार्य को करूंगा।

जब वे निर्णय पर पहुंचे तब उनके चित्त को शांति मिली। छूटते समय सब का वज़न घटा था परन्तु डॉक्टरजी का २५ पौंड बढ़ा।

वजन बढ़ा?
यह कैसे हुआ?

हिन्दू समाज जैसी सब कुछ पचाने की क्षमता है, इसलिये।

दिनांक १२ जुलाई १९२२ को डॉक्टरजी कारामुक्त हुए। द्वार पर उनका बड़ा स्वागत हुआ।

सन १९२३ ईस्वी. अंग्रेजों की चाल सफल हुई। मुसलमान नाना प्रकार से हिन्दू समाज का विरोध करने लगे। रास्ते पर बाजा बजाने में आपत्ति उठाने लगे। अंग्रेज उनका पक्षपात करते थे, लोग डरने लगे। तब अनेक बार वे स्वयं ढोल पीटते हुए रास्ते से जाते थे।

सन १९२५ ई. विजयादशमी के शुभ मुहूर्त पर डॉक्टरजी के घर पन्द्रह लोगों की उपस्थित में संघ की स्थापना हुई।

हिन्दू समाज को सुसज्ज, सुयोग और सुसंगठित बनाने के लिए तथा भारत को स्वतन्त्र करने के लिए आज हमने संघ की स्थापना की है।

मोहिते का बाड़ा एक रवंडहर था। अपने सहकारियों को साथ लेकर फावड़ा, कुदाली आदि चलाकर स्वयं डॉक्टर जी ने वह स्थान खेलने योग्य बनाया।

इतवार की प्रभात में सब स्वयंसेवकों को पूर्ण गणवेश में संघस्थान पर रहने का निश्चय था परन्तु डॉक्टरजी को ३२ मील दूर एक दिन पूर्व अडेगांव जाना पड़ा लौटने के लिये वाहन नहीं था। पैर में काँटा, वर्षा और कीचड़ परन्तु वे पैदल चल पड़े

रातभर चलेंगें सुबह संघस्थान पर उपस्थित रहेंगें

रात में पैदल? फिर हम किस काम के? आइये।

प्रयत्नशील की परमेश्वर भी सहायता करता है। सात मील चलने के बाद...

दूसरे दिन सुबह ठीक समय पर डॉक्टरजी पूर्ण गणवेश में सब स्वयंसेवकों के साथ उपस्थित थे।

हिन्दुओं का जागृत होना मुसलमानों को बहुत खलने लगा। हर तरफ से वे हिन्दुओं को सताने लगे। डॉक्टरजी पर उनका विशेष रोष था।

रात्री में डॉक्टरजी के मकान पर पथराव होने लगा।

डॉक्टरजी को धमकियों भरे पत्र आने लगे।

छोटी गलियों से हिन्दू युवकों की टोलियां निकलीं, उनके प्रतिकार करते ही....

रविवार दिनांक ४ सितम्बर १९२६ को हजारों मुसलमानों ने शस्त्र लेकर नागपुर में भयानक जुलूस निकला वे मारपीट व तोड़ फोड़ करने लगे।

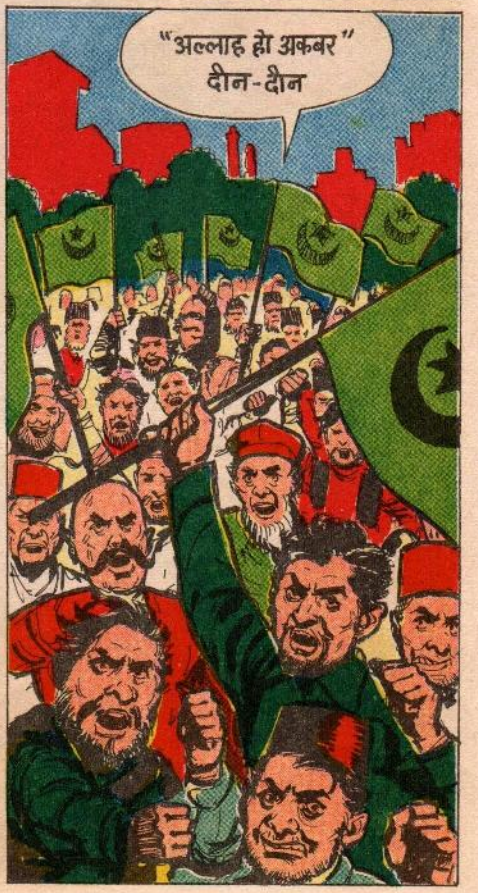

नागपुर के बाहर "स्टार्की व्हाईट" पर डॉक्टरजी ने संघके चुने हुए ९९ स्वयंसेवकों का वन-विहार का कार्यक्रम रखवा। वहां पर सब को प्रतिज्ञा दी गई।

"..इस व्रत का मैं आजन्म पालन करूंगा।"

"...इस व्रत का मैं आजन्म पालन करूंगा।"

जुलाई १९२८ में "गुरू दक्षिणा" का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। प्रथम डॉक्टरजी ने महत्व समझाया फिर स्वयं पूजन कर दक्षिणा समर्पित की।

"भगवाध्वज ही अपने राष्ट्रीयत्व का प्रतीक है। वह हमारा गुरू है। संघ किसी व्यक्ति को गुरू-स्थान पर नहीं पूजना चाहता। हमारे इस गुरू के सम्मुख आज हम प्रतीक स्वरूप धन समर्पित करेंगे।

अनेक गणमान्य व्यक्तियों को डॉक्टरजी संघ के कार्यक्रमों में बुलाते थे। १६ अगस्त १९२८ को वे विट्ठलभाई पटेल को मोहिते संघस्थान ले आये। संचलनादि शाखा के कार्यक्रम देखकर विट्ठलभाई बहुत प्रभावित हुए।

जगत् में ईश्वर को छोड़ कर किसी से मत डरो। अपने कार्य पर अचल निष्ठा रखो। शीघ्रता से कार्यसिद्धि करो।

राजगुरू को मार्गदर्शन

पूना जाने का विचार तक छोड़ो, अमरेड में रहो ।

पंडित मदन मोहन मालवीय जी से भेंट हुई ।

मैं संघ के लिए भी धन संग्रह कर सकता हूं ।

मुझे पैसा नहीं, आपका आशीर्वाद चाहिए ।

डॉक्टरजी यवतमाल जिले का दौरा करते हुए पुसद में पहुंचे। वहां, एक कसाई गाय काटने के लिए सिद्ध था उन्होंने उग्र रूप धारण किया। बाद में, डॉक्टरजी ने गाय गौरक्षण संस्था को दे दी।

मेरे जीते जी यह कभी नहीं हो सकता ।

सन् १९३० ई. में देश भर में सत्याग्रह, आन्दोलन चला। डॉक्टरजीने सोत्साह भाग लिया। जुलाई १९३० को उन्होंने अपने दल सहित यवतमाल के निकट जंगल सत्याग्रह किया। उन्हें नौ माह के सश्रम कारावास की सजा दी गई।

डॉक्टरजी को अकोला जेल भेजा गया। विदर्भ के अनेक सत्याग्रही वहीं भेजे गये। डॉक्टरजी को यह वरदान लगा। उन्होंने कारावास को संघ का प्रशिक्षण केन्द्र बनाया।

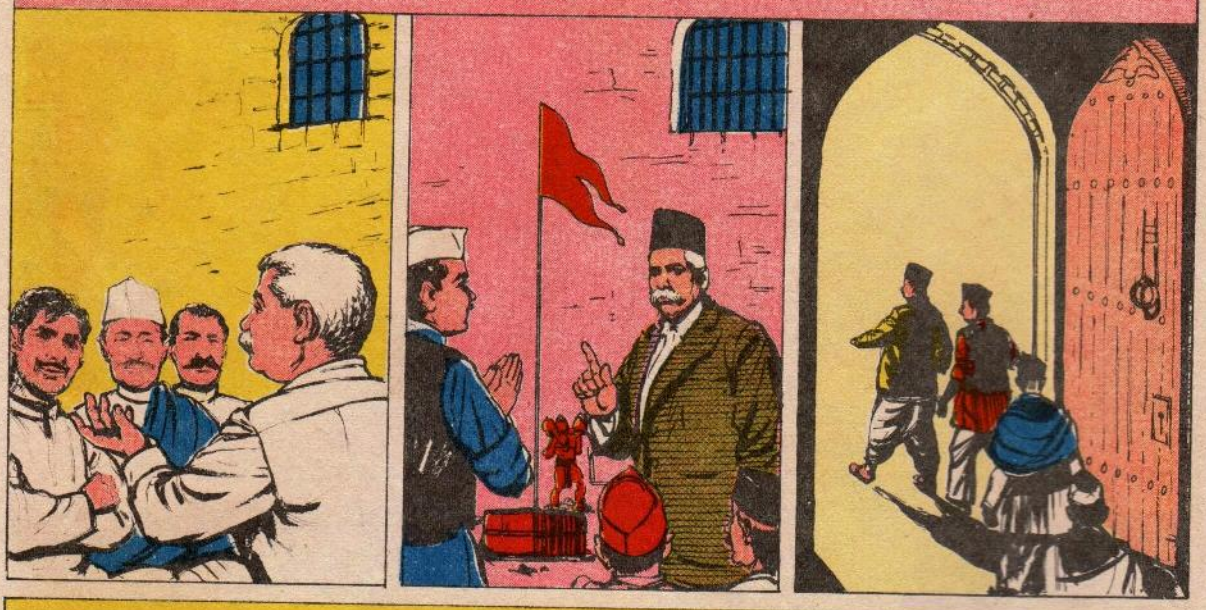

डॉक्टरजी जब काशी गये तब श्री काशी विश्वेश्वर के मंदिर के निकट की मस्जिद तथा घाट पर मीनार देख उन्हें बहुत दुःख हुआ।

लोगों को परखने में तथा योग्य लोगों को ध्यान में रखकर उनसे सम्पर्क बढ़ाने में डॉक्टरजी कुशल थे। इसीलिए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्राध्यापक माधवराव सदाशिव गोलवलकर जब नागपुर में दिखाई दिये तब डॉक्टरजी ने स्वयं उनसे पूछताछ की।

आप ही माधवराव गोलवलकर हैं? एक बार मेरे घर अवश्य आइये।

जी हां अवश्य! अवश्य!!

माधव मुले मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण किशोर स्वयंसेवक था। जब वह अपने घर कोंकण जाने लगा डॉक्टरजी स्वयं विदाई समारोह में तथा स्टेशन पर उपस्थित हुए।

कोंकण के गांव-गांव में शाखा निर्माण करो।

डॉक्टरजी जब पूना गये तब संघ की प्रारंभिक बैठक मराठी साहित्य सम्राट न. चि. केलकर के घर हुई। बाल की खाल निकालने वाले विद्वानों ने भी संघ कार्य की सराहना की।

यह एक परम आवश्यक कार्य है।

सन् १९३५ ईस्वी में संघ का वर्धा जिला शिविर गांधी जी के निवास स्थान के निकट था। वसति गृह निर्माण, अनुशासन, घोष आदि बातें सुनकर गांधीजी के मन में आकर्षण उत्पन्न हुआ। दिनांक २५ दिसम्बर १९३४ की प्रातः ७ बजे वे शिविर में उपस्थित हुए।

मैं बहुत प्रसन्न हूं। ऐसा दृश्य मैंने भारत भर में कहीं नहीं देखा।

गांधीजी अप्पाजी के साथ ध्वज प्रणाम कर रहे हैं।

गांधीजी ने स्वयंसेवकों से अनेक प्रश्न पूछे। भेदभावहीन वातावरण देख उन्हें आनन्द हुआ।

२६ दिसम्बर १९३४ को डॉक्टरजी वर्धा आये। गांधीजी के निवास स्थान पर, गांधीजी व डॉक्टरजी की लगभग एक घंटा वार्ता हुई। साथ में भोपटकर भी थे।

"बहुत अच्छा। आपके कार्य की सफलता में निश्चित ही देश का हित सन्निहित है।"

संघ तथा डॉक्टरजी का नाम अन्य प्रान्तों में पहुंचा। अनेक स्थानों से चिट्ठियां आने लगीं।

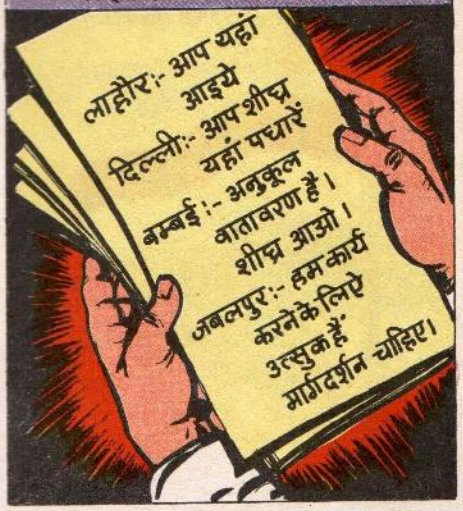

डॉक्टर जी ने नवयुवकों को अन्य प्रान्तों के बड़े नगरों विद्याध्ययन के बहाने भेजा।

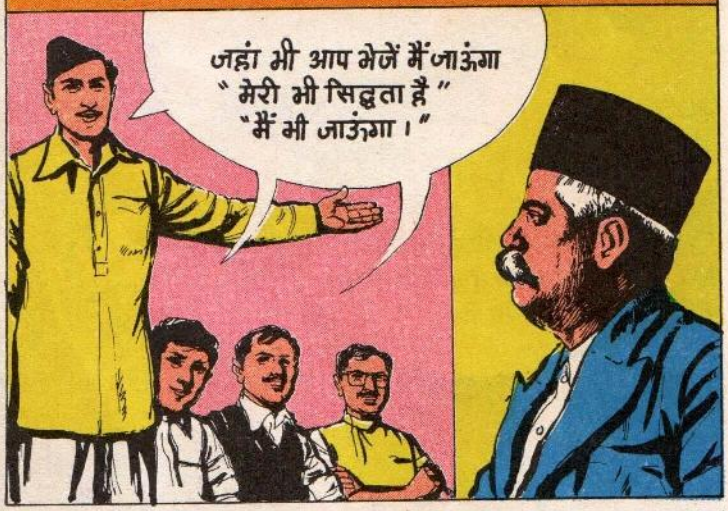

वर्धा की श्रीमती लक्ष्मीबाई केलकर ने स्त्रियों के संगठन के विषय में डॉक्टरजी से परामर्श किया।

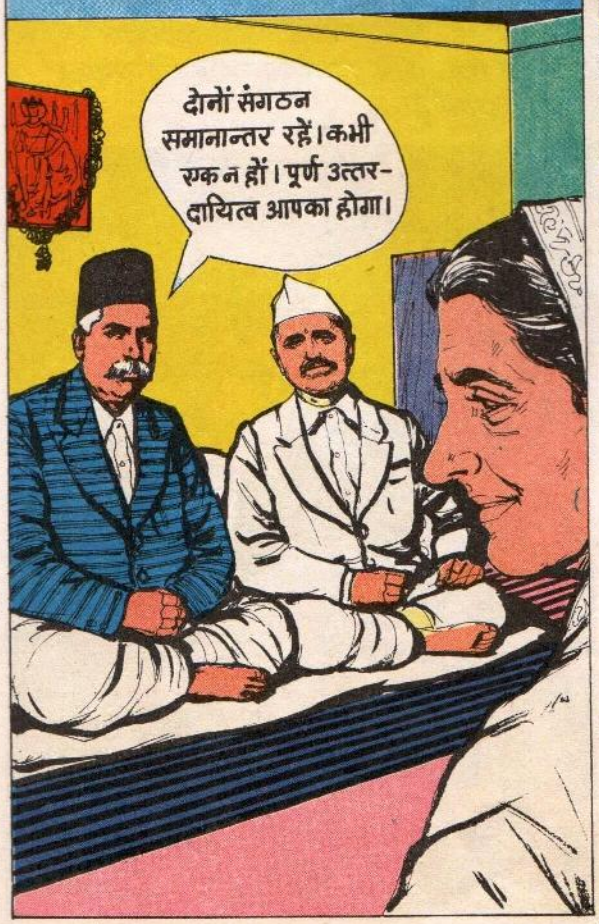

सन् १९३६ ईस्वी में डॉक्टरजी सातारा गये थे। स्वागत प्रणाम आदि के बाद वे कोने में खड़े पुराने क्रान्तिकारी दामोदर बलवन्त भिड़े के सम्मुख गये और उन्होंने उन्हें साष्टाङ्ग प्राणिपात किया।

२२ मार्च १९३७ को वे नासिक में थे। माननीय राजाभाऊ साठे के साथ जाते हुए उन्होंने बोर्ड देखा।

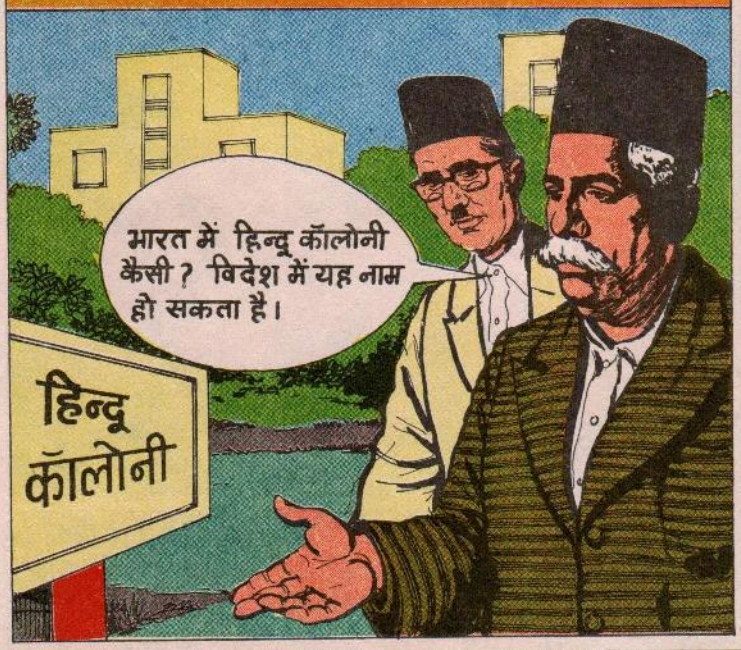

दिसम्बर १९३६ में फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन में प्रारंभिक ध्वजारोहण में अड़चन उपस्थित हुई। तब स्वयंसेवक किशनसिंह ने ऊँचे पोल पर चढकर डोरी गिर्री पर बैठाई। वह साहस का कार्य था।

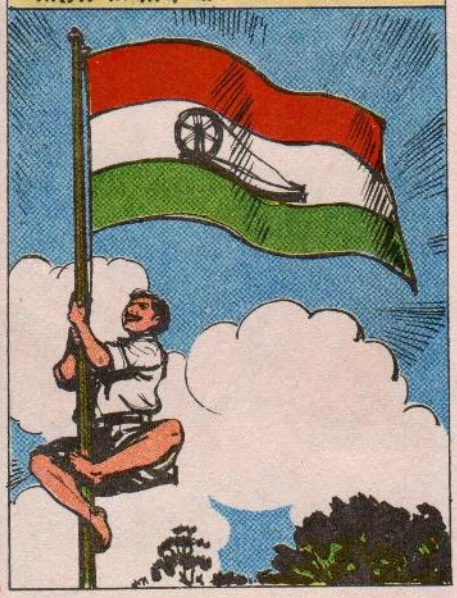

धूलिया के देवपुर शाखा में किशन सिंह को बुलवाकर तथा उसे चांदी की प्याली देकर डॉक्टरजी ने उसका विशेष सत्कार किया।

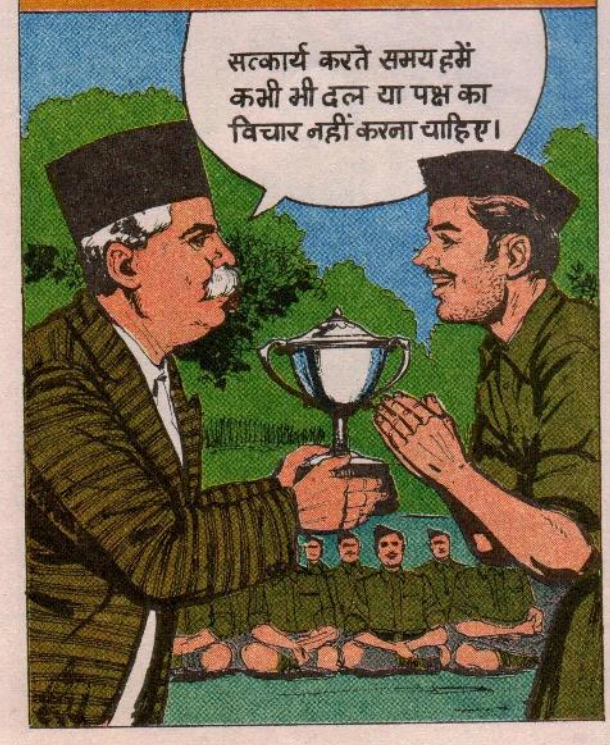

१३ मई १९३८ को वे पूना में "सोन्या मारूति सत्याग्रह" में सहभागी हुए।

मैं संघ की वृद्धि की कामना करता हूं ।

दिसम्बर १९३६ में स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी का विदर्भ क्षेत्र का दौरा हुआ। तब नागपुर स्टेशन पर स्वयंसेवकोंने सघोष उनका स्वागत किया। नागपुर के हेमन्त शिविर में उनका आशीर्वादात्मक भाषण हुआ

३० अप्रेल १९३८ को डॉक्टरजी पूना में हुई हिन्दू युवक परिषद के अध्यक्ष चुने गये। पूना में उनका अलौकिक स्वागत हुआ।

डॉक्टरजी औंध नरेश के निमंत्रण पर औंध गये। उनके साथ उनका चित्र संग्रह देखते हुए उन्होने एक चित्र देखा, तब उनके मुखसे उद्गार निकले...

"महाराज, इस अवतार कल्पना ने हमारा सत्यानाश किया हैं भगवान सब करेंगे, हम अकर्मण्य बैठे रहेंगे ऐसी दुर्भावना अवतार वाद के सहारे पनपी हैं।

सन् १९३८ ईस्वी में भागानगर निशस्त्र प्रतिकार प्रारम्भ हुआ भैयाजी दाणी ने उस सत्याग्रह में भाग लिया।

अवश्य जाओ मेरा तुम्हें आशीर्वाद है।

डॉक्टरजी वज्रदेही थे। परन्तु अविरत परिश्रम के कारण वे बार-बार बीमार होने लगे। पीठ में वेदना होती थी। नित्य पसीना आता था। कमजोरी बनी रहती थी। फिर भी प्रवास जारी था। गांव-गांव, नगर-नगर जाना, बैठकें लेना, स्वयंसेवकों से तथा प्रतिष्ठित जनों से मिलना। रात-बे रात जागना, कुपथ्यकर भोजन करना नित्य चल रहा था

नागपुर
अकोला
बम्बई
पूना
जबलपुर
कलकत्ता
बनारस
दिल्ली
लाहौर

नासिक में एक कार्यकर्ता के घर भोजनोपरान्त जब एक स्वयंसेवक डॉक्टर ने उनको स्पर्श किया।

इन्हें तो एक सौ तीन डिग्री बुखार है।

आगे के कार्यक्रम स्थगित कर उन्हें देवलाली तथा नासिक में रखा गया। उस समय श्री गुरूजी माधवराव गोलवलकरजी ने उत्तम सेवा की।

१३ अगस्त १९३९ को नागपुर में "गुरू पूर्णिमा" के उत्सव के अवसर पर डॉक्टरजी ने श्री माधवराव गोलवलकर उपाख्य श्री गुरूजी के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण घोषणा की

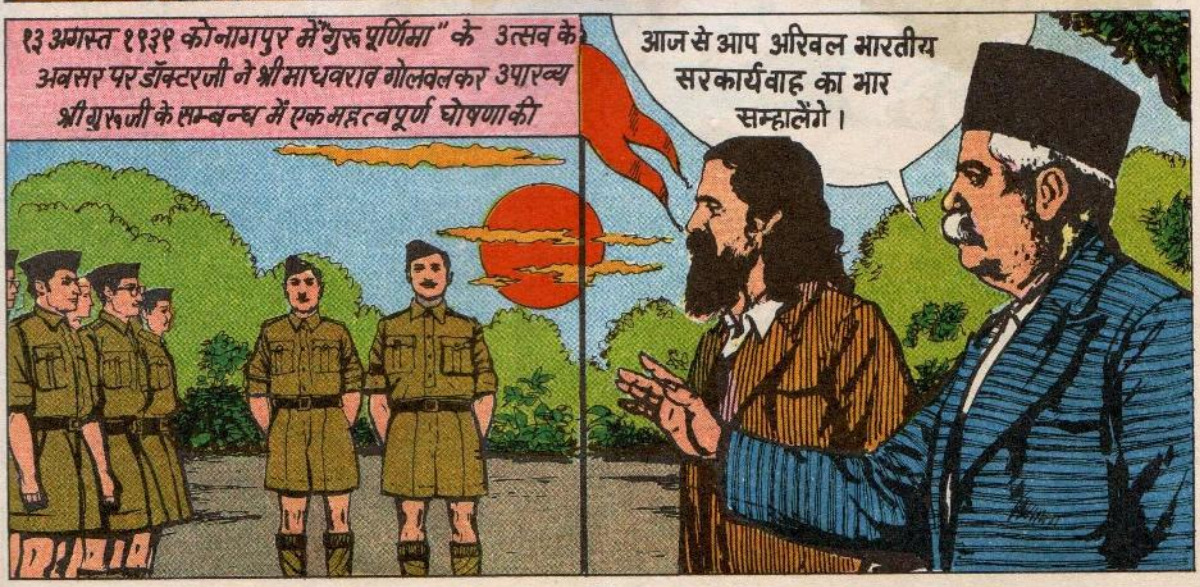

डॉक्टरजी की बीमारी बढ़ रही थी कार्यकर्त्ताओं ने तथा डॉक्टरों ने उन्हें राजगीर की उष्ण जलधारा में स्नान के उपाय का आग्रह किया और उन्हें राजगीर ले गये।
हम डॉक्टर जी को राजगीर ले चलेंगे।
कुंड पर भी डॉक्टरजी का संघकार्य जारी रहा। वहां दूर-दूर से आने वाले लोगों से वे परिचय प्राप्त करते और उन्हें अपने मुकाम पर बुलाते
डॉक्टरजी सोये हुए थे स्थानीय विद्यार्थी चंदा मांगने आये परिचारक तैलंग ने उन्हें भगा दिया।
३ मार्च १९४० को बिहार प्रान्त की कार्यकर्त्ताओं की बैठक में संघ कार्य की विस्तार की योजना बनाई
बिहार
बंगाल
आप जाइए डॉक्टरजी अभी मिलेंगे नहीं।
डॉक्टरजी आहट पाकर जागे। उन्होने उन विद्यार्थियों को बुलवाया। सबसे परिचय प्राप्त किया शाम को क्या रवेलते हैं इत्यादि पूछा उन्हें चन्दा दिया और प्रेम से विदा किया।
यहां शारवा खुलेगी ये सब स्वयं सेवक बनेगे।
जागते में संघ, नींद में संघ, स्वप्न में संघ
१९४० वर्ष क्या वैसा ही जायेगा ? अभी कितना कार्य करना है हम स्वतन्त्र कब होंगे...

राजगीर के उपचार से लाभ नहीं हुआ। पर अब उन्होंने देह की चिन्ता छोड़ दी। वे पूर्ववत प्रवास करने लगे। २९ अप्रैल १९४० को पूना संघ शिक्षा वर्ग में पहुंचे। वहां उन्होंने परिचयात्मक बैठकें लीं। उनके उत्कृष्ट बौद्धिक हुए। स्वयंसेवकों को देखते रहने में भी उन्हें आनन्द आता था

पूना के वर्ग में महाराष्ट्र की प्रान्तीय बैठक हुई। बैठक में स्वातन्त्र्यवीर सावरकर जी भी उपस्थित हुए। उन्होंने शुभेच्छाएं प्रकट कीं।

"राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ" देश की एकमात्र आशा की किरण है। आप अपने नेता पर पूर्ण विश्वास रखिये।

१५ मई १९४० को डॉक्टरजी ने पूना से प्रस्थान किया। देन जब छूटने लगी तब उन्होंने हाथ जोड़े।

अच्छा मैं चलता हूँ

नागपुर के स्टेशन पर उनके स्वागतार्थ श्री गुरूजी, कृष्णराव मोहरीर आदि उपस्थित थे। गुरू जी हार ले आये थे। जब डॉक्टर जी को हार पहनाने लगे तब डॉक्टरजी ने नयन संकेत किया। गुरू जी समझ गये। उन्होंने बाबुआजी को हार पहनाया

नागपुर संघ शिक्षावर्ग का रात्री का क्रार्य क्रम अधूरा छोड़कर डॉक्टर जीको तेज बुखार के कारण घर जाना पड़ा।

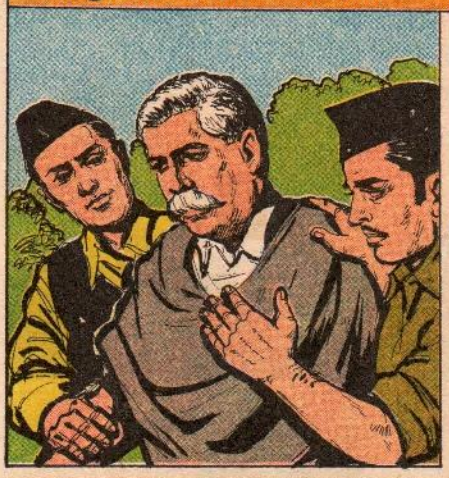

ऐसी अवस्था में डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी उनसे मिलने आये। डॉक्टर जी ने बैठते हुए कहा, "आप जैसे बड़े डॉक्टर के आते ही मेरी बीमारी भाग गयी।

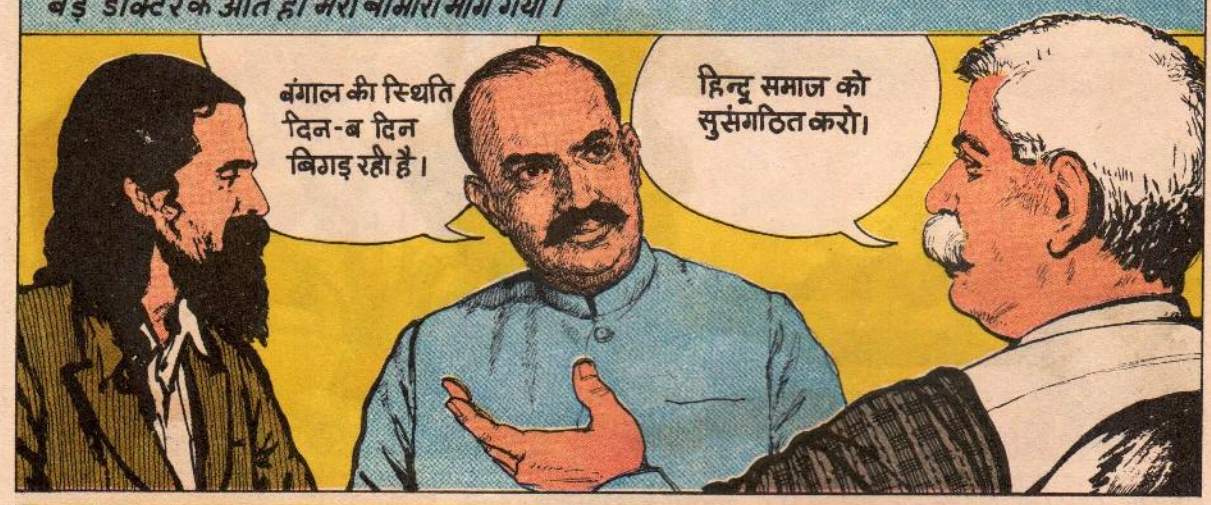

प्रतिदिन श्री गुरुजी तथा अन्य अधिकारी वर्ग का विवरण प्रस्तुत करते। परन्तु डॉक्टर जी को वर्ग में जाने की तीव्र इच्छा बनी रहती।

आखिर में डॉक्टरों से परामर्श कर, कार्य कर्ताओं ने उन्हें वर्ग के समारोप समारोह में ले जाने का निर्णय किया। वह डॉक्टरजी का भाषण अंतिम सिद्ध हुआ।

क्षमा करें मैं आपकी तनिक भी सेवा नहीं कर सका.... आज दर्शन करने आया हूं... स्वयं सेवक भावना से, बंधुभावना से हम बंधे हैं। बंधुओं से भी बढ़कर हमारा प्रेम होना चाहिए... हमें आसेतु हिमालय तक फैले हुए हिन्दू समाज को संगीठत करना है... इस कार्य के द्वारा ही देश सबल होगा, वैभव सम्पन्न होगा.... संघ कार्य ही मेरा जीवित कार्य है यह मंत्र हृदय पर अंकित करो।....

एक बार सुभाष चन्द्र बोस ने गाड़ी में से स्वयंसेवकों का संचलन देखा था। फिर डॉक्टरजी के बारे में उन्होंने बहुत सुना था। डॉक्टरजी से मिलने की उनकी बहुत इच्छा थी, जब डॉक्टरजी नासिक में बीमार थे तब उन्होंने संदेशा भी भेजा था। अब वे स्वयं नागपुर आये पर....

अहा यह हेडगेवारजी का संघ है। मुझे इन्हें मिलना ही होगा।

किन्तु भाग्य में मिलना नहीं था।

इन्हें तकलीफ मत दो, मेरी ओर से प्रणाम कह देना।

डॉक्टरजी का स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया। उन्हें अस्पताल में रखा था। फिर घटाटेजी के बंगले पर लाया गया।

"लंबर पंक्चर करना होगा।"

ठहरिये, मुझे समय दीजिये।

माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरूजी को डॉक्टरजी ने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।

दिनांक २१ जून १९४० की प्रभात में ९ बजकर २७ मिनट पर डॉक्टरजी ने चिर विश्राम प्राप्त किया

घटाटे जी के बंगले पर दर्शनार्थियों का तांता लगा है। शाम ५ बजे विराट शवयात्रा निकली। यशोपक्ष के सब छोटे-बड़े नेताओं ने इस अजातशत्रु महापुरूष का सम्मान किया। जो नित्य फूलमालाओं से दूर रहा उसकी देह फूलमालाओं से लद गई। अपार जनसागर उमड़ पड़ा।

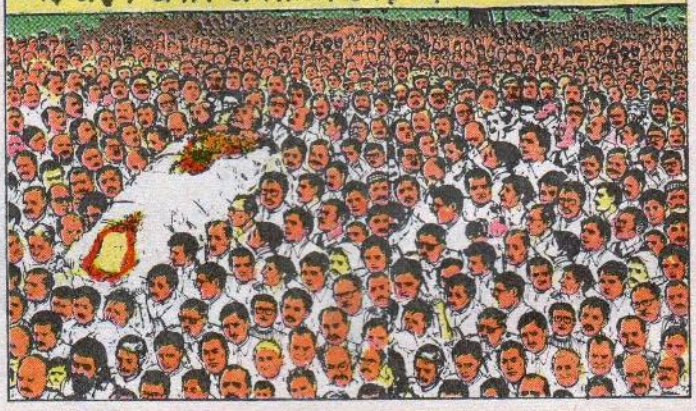

रेशिम बाग का मैदान उनकी कर्मभूमि था। वहीं पर दाह क्रिया हुई। अग्निमय शरीर अग्नि में विसर्जित हुआ।

नागपुर रेशिमबाग मैदान में उसी स्थान पर उनका स्मारक बना है। उसके सम्मुख उपस्थित हो, आज हजारों स्वयंसेवक प्रतिज्ञा लेते हैं और नव चेतना पाते हैं। देशभर का महातीर्थ है वह!

सिन्धु महानद से लेकर सागर पर्यन्त
इस भारत भूमि को जो व्यक्ति अपनी
पुण्य भूमि और पितृभूमि स्वीकार
करता है, वही "हिन्दू" है।

— वीर सावरकर

गोविन्द एस. रहिल्याणी एवं परिवार के सौजन्य से ।

साहसी बन सत्य जीवन में भरो।
स्वप्न-जग को दूर आँखों से करो ॥
यदि न सम्भव, सत्य स्वप्नों को निहारो।
प्रेम, सेवा रूप में निज प्राण वारो ॥

— स्वा. विवेकानन्द

जनता की पुकार, बम्बई के सौजन्य से।

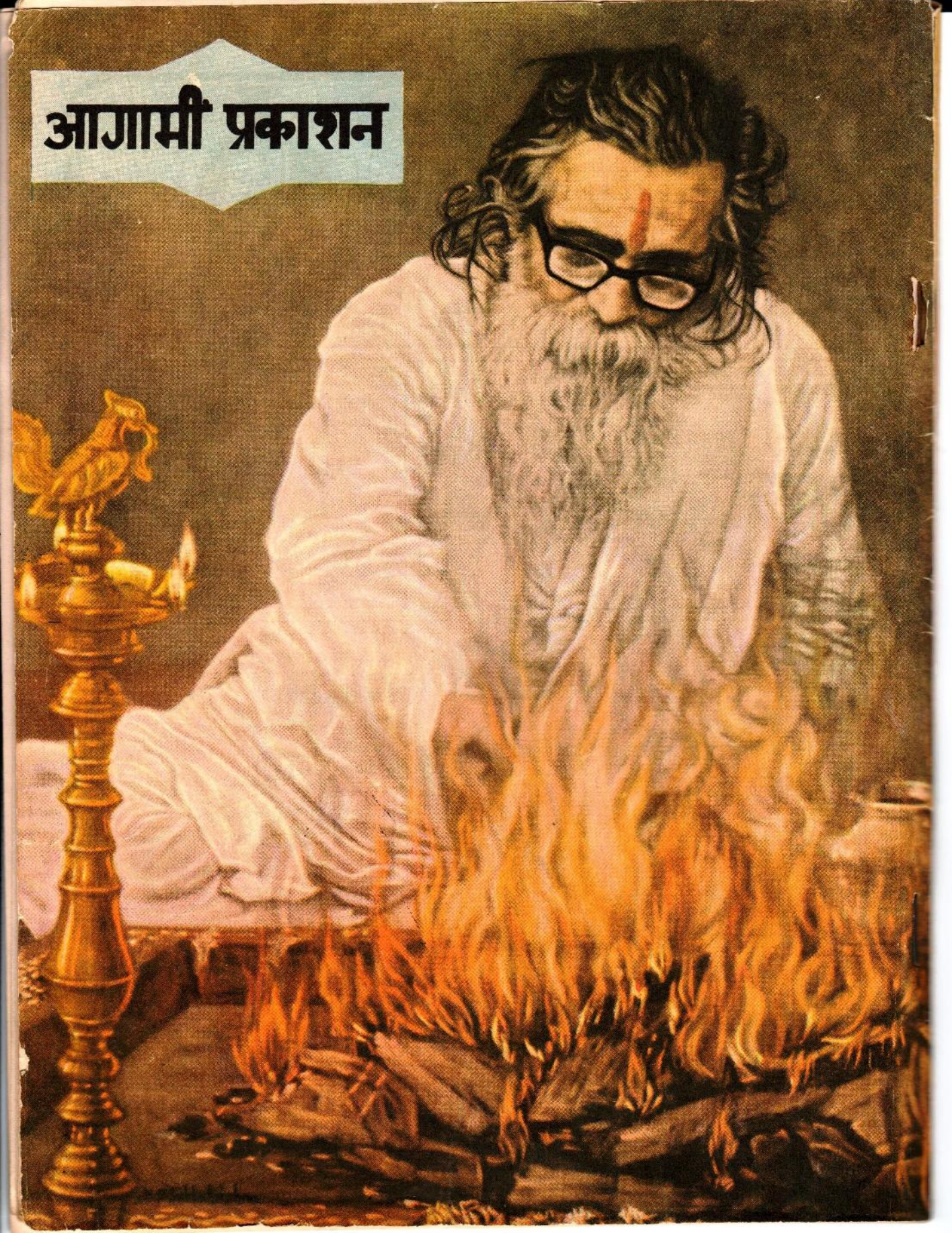

आगामी प्रकाशन